International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 10-06-2026, Accepted: 10-07-2026, Published: 25-07-2026
Volume 8, Issue 3, 2026, Page No. 14-15

स्वतंत्र्योत्तर हिंदी विज्ञान कथा साहित्य में भविष्य की झलक

कविता लिटौरिया[1], डॉ0 के0 सी0 जैन[2]
[1] शोधार्थी, हिन्दी विभाग, प्र0 म0 कॉ0 ऑ0 ए0, शास0 अग्रणी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, टीकमगढ़, मध्य प्रदेश, भारत
[2] प्राचार्य एवं प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, प्र0 म0 कॉ0 ऑ0 ए0, शास0 अग्रणी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, टीकमगढ़, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
हिंदी साहित्य में विज्ञान कथा एक उभरती हुई विधा है जो वैज्ञानिक प्रगति, प्रौद्योगिकी और भविष्य की संभावनाओं को कल्पनाशील रूप से चित्रित करती है। यह शोध पत्र हिंदी विज्ञान कथाओं में भविष्य की झलक का विश्लेषण करता है, जिसमें कहानियाँ, नाटक और उपन्यास शामिल हैं। 19वीं शताब्दी से शुरू हुई इस परंपरा में लेखक जैसे अंबिका दत्त व्यास, देवकी नंदन खत्री, राहुल सांकृत्यायन, देवेंद्र मेवाड़ी, अरविंद मिश्र, जयंत विष्णु नार्लीकर, हरीश गोयल और जीशान हैदर जैदी ने भविष्य के समाज, अंतरिक्ष यात्रा, पर्यावरणीय चुनौतियाँ, कृत्रिम बुद्धि और नैतिक मुद्दों को उजागर किया है। अध्ययन से पता चलता है कि ये रचनाएँ न केवल मनोरंजन करती हैं बल्कि वर्तमान की समस्याओं पर चिंतन भी कराती हैं, जैसे तकनीकी दुरुपयोग, मानवीय मूल्य और पर्यावरण संरक्षण, बल्कि भविष्य की झलक इनमें आशावादी और चेतावनीपूर्ण दोनों रूपों में दिखाई देती है, जो हिंदी साहित्य की विविधता को समृद्ध करती है। अधिक विस्तृत उदाहरणों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि विज्ञान कथा भविष्य की तैयारी का सशक्त माध्यम है।

मूल शब्दः हिंदी विज्ञान कथा, भविष्य दर्शन, अंतरिक्ष यात्रा, वैज्ञानिक कल्पना, पर्यावरणीय चुनौतियाँ, नैतिक मुद्दे, कहानियाँ, नाटक, उपन्यास, देवेंद्र मेवाड़ी, अरविंद मिश्र, जयंत नार्लीकर, हरीश गोयल

हिंदी साहित्य की दुनिया में विज्ञान कथा एक ऐसी विधा है जो कल्पना और विज्ञान के मिश्रण से भविष्य की संभावित दुनिया को रचती है। यह विधा 19वीं शताब्दी के अंत में शुरू हुई, जब पश्चिमी लेखकों जैसे जूल्स वर्न और एच. जी. वेल्स के प्रभाव से हिंदी लेखकों ने वैज्ञानिक कल्पनाओं को अपनी रचनाओं में स्थान दिया। हिंदी में पहली विज्ञान कथा आश्चर्य वृत्तांत (1884–88) अंबिका दत्त व्यास द्वारा लिखी गई, जो पृथ्वी के केंद्र की यात्रा पर आधारित है। इसके बाद केशव प्रसाद सिंह की चंद्रलोक की यात्रा (1900) ने चंद्रमा की यात्रा का चित्रण किया। 20वीं शताब्दी में राहुल सांकृत्यायन की बाईसवीं सदी (1924) जैसे कार्यों ने साम्यवादी भविष्य की कल्पना की। आधुनिक समय में देवेंद्र मेवाड़ी, अरविंद मिश्र, जयंत नार्लीकर, हरीश गोयल और जीशान हैदर जैदी जैसे लेखकों ने इस विधा को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया। यह पत्र हिंदी विज्ञान कथाओं में भविष्य की झलक को कहानियों, नाटकों और उपन्यासों के माध्यम से विश्लेषित करता है, जो वैज्ञानिक प्रगति के साथ मानवीय भावनाओं को जोड़ती हैं। अधिक विस्तृत उदाहरणों से यह स्पष्ट होगा कि ये रचनाएँ भविष्य के सामाजिक, नैतिक और पर्यावरणीय परिदृश्यों को कैसे दर्शाती हैं।

हिंदी विज्ञान कथा से संबंधित कहानियाँ

हिंदी में विज्ञान कथाएँ मुख्य रूप से लघु कथाओं के रूप में विकसित हुईं, जो भविष्य की तकनीकी और सामाजिक परिवर्तनों को दर्शाती हैं। देवेंद्र मेवाड़ी की कहानियाँ जैसे भविष्य संग्रह (1994) में शामिल निर्णय और एक कहानी भविष्य के समाज में नैतिक दुविधाओं को उजागर करती हैं, जहाँ कृत्रिम बुद्धि और क्लोनिंग जैसी तकनीकें मानवीय संबंधों को प्रभावित करती हैं। उदाहरण के लिए, निर्णय में एक वैज्ञानिक अपने क्लोन बच्चे के भविष्य को लेकर नैतिक संघर्ष करता है, जो भविष्य में तकनीक के दुरुपयोग की चेतावनी देता है। अरविंद मिश्र की दत्तक पुत्र में भविष्य की प्रजनन तकनीक और एलियन संपर्क की कल्पना की गई है, जहाँ एक दत्तक पुत्र अंतरिक्ष से आता है और मानवता के अस्तित्व पर सवाल उठाता है। हरिशंकर परसाई की भविष्य का संसार व्यंग्यात्मक रूप से भविष्य के तकनीकी समाज की आलोचना करती है, जहाँ मशीनें मानव जीवन को नियंत्रित करती हैं और व्यक्तिगत स्वतंत्रता समाप्त हो जाती है। जयंत नार्लिकर की 'अंतरिक्ष यात्री' अंतरिक्ष यात्रा के माध्यम से भविष्य की खोज को दर्शाती है, जिसमें एक यात्री समय यात्रा के दौरान भविष्य के पर्यावरणीय विनाश को देखता है। अधिक विस्तृत उदाहरण के रूप में, हरीश गोयल की शुक्र ग्रह और अंतरिक्ष लुटेरा में एक अंतरिक्ष लुटेरा शुक्र ग्रह पर विचित्र उपकरण चुराता है, और नायक अमित तथा रोहित उसका पीछा करते हुए ग्रह की भौगोलिक विशेषताओं जैसे एफ्रोडाइट टेरा और आर्टमिस कैज्म का वर्णन करते हैं, जो भविष्य की अंतरिक्ष खोज और खतरे को जीवंत बनाता है। इसी प्रकार, जयंत नार्लिकर की वायरस कहानी में एक महामारी भविष्य के समाज को प्रभावित करती है, जहाँ वैज्ञानिकों को अंतरिक्ष से आए वायरस से जूझना पड़ता है, जो वर्तमान महामारियों की याद दिलाती है। प्रेमचंद गुप्ता की रोबोट्स का विद्रोह में रोबोट मानवता के खिलाफ विद्रोह करते हैं, जो कृत्रिम बुद्धि के भविष्य के जोखिमों पर प्रकाश डालती है। ये कहानियाँ भविष्य की झलक में आशा और खतरे दोनों को दिखाती हैं, जैसे पर्यावरण विनाश या तकनीकी क्रांति।

हिंदी विज्ञान कथा से संबंधित नाटक

हिंदी में विज्ञान कथा नाटक कम हैं, लेकिन वे प्रभावशाली हैं और भविष्य की सामाजिक समस्याओं को मंच पर जीवंत करते हैं। जीशान हैदर जैदी का नाटक बुड्ढा फ्यूचर (2008) भविष्य के समाज में वृद्धावस्था और तकनीकी हस्तक्षेप को चित्रित करता है, जहाँ अमरता की खोज नैतिक प्रश्न उठाती है। नाटक में एक वृद्ध व्यक्ति तकनीक से युवा बनने की कोशिश करता है, लेकिन परिवारिक संबंधों का ह्रास दिखाता है, जो व्यंग्य के माध्यम से तकनीक के मानवीय प्रभाव को दर्शाता है। अन्य उदाहरणों में विज्ञान नाटक जैसे विज्ञान के माध्यम से नाटक शामिल हैं, जो विज्ञान प्रसार के लिए उपयोग होते हैं, जैसे पर्यावरणीय भविष्य पर आधारित। अधिक विस्तृत उदाहरण के रूप में, देवेंद्र मेवाड़ी का नाटक नाटक में विज्ञान बाल मनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए भविष्य की वैज्ञानिक खोजों को नाटकीय रूप से प्रस्तुत करता है, जहाँ बच्चे विज्ञान के प्रयोगों के माध्यम से भविष्य के

समाज की कल्पना करते हैं। इसी प्रकार, काल चक्र नामक विज्ञान नाटक समय यात्रा और भविष्य के परिवर्तनों पर आधारित है, जिसमें पात्र भविष्य में जाकर पर्यावरणीय संकटों का सामना करते हैं, जो दर्शकों को चेतावनी देता है। ये नाटक दर्शकों को भविष्य की चुनौतियों से अवगत कराते हैं, जैसे जलवायु परिवर्तन या कृत्रिम बुद्धि का दुरुपयोग, और सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता पर जोर देते हैं।

हिंदी विज्ञान कथा से संबंधित उपन्यास

हिंदी विज्ञान कथा उपन्यास भविष्य की विस्तृत दुनिया रचते हैं। राहुल सांकृत्यायन का बाईसवीं सदी (1924) एक साम्यवादी यूटोपिया का चित्रण करता है, जहाँ तकनीक सामाजिक समानता लाती है और भविष्य में वर्गहीन समाज की कल्पना की जाती है। देवकी नंदन खत्री का चंद्रकांता (1892) हालांकि मुख्य रूप से फैंटसी है, लेकिन इसमें वैज्ञानिक उपकरणों जैसी कल्पनाएँ भविष्य की झलक देती हैं, जैसे जादुई मशीनें जो आधुनिक तकनीक का पूर्वानुमान करती हैं। जीशान हैदर जैदी का उपन्यास ताबूत (2005–07) भविष्य के रहस्यमयी घटनाओं और तकनीकी रहस्यों को उजागर करता है, जहाँ एक प्राचीन ताबूत भविष्य की तकनीक से जुड़ता है। हरीश गोयल का शुक्र ग्रह और अंतरिक्ष लुटेरा बाल उपन्यास होते हुए भी वयस्कों के लिए भविष्य की अंतरिक्ष यात्रा की कल्पना करता है। अधिक विस्तृत उदाहरण के रूप में, जयंत नार्लिकर का अंतरिक्ष में विस्फोट उपन्यास बच्चों को ध्यान में रखकर लिखा गया है, जिसमें अंतरिक्ष यात्रा के दौरान एक विस्फोट भविष्य के वैज्ञानिक संकटों को दर्शाता है, जैसे ब्लैक होल और समय विकृति। दुर्गाप्रसाद खत्री के प्रतिशोध और लाल पंजा उपन्यास विज्ञान कथा के उदयकाल के हैं, जहाँ वैज्ञानिक उपकरणों से बदला लिया जाता है, जो भविष्य में तकनीक के नैतिक उपयोग पर सवाल उठाते हैं। जीशान हैदर जैदी का सूरैन का हीरो उपन्यास अंतरिक्ष और सुपरहीरोज की दुनिया रचता है, जहाँ एक हीरो भविष्य के एलियन हमलों से पृथ्वी बचाता है। ये उपन्यास भविष्य में मानवता के संघर्ष, तकनीकी प्रगति और नैतिक संकटों को दर्शाते हैं, जो वर्तमान समाज को आईना दिखाते हैं।

निष्कर्ष

हिंदी विज्ञान कथाओं में भविष्य की झलक एक बहुआयामी दृष्टि प्रस्तुत करती है, जहाँ तकनीक आशा और खतरे दोनों का प्रतीक है। कहानियाँ, नाटक और उपन्यास के माध्यम से लेखक पर्यावरण, समाज और नैतिकता के भविष्य पर चिंतन करते हैं। अधिक विस्तृत उदाहरणों से स्पष्ट है कि ये रचनाएँ भविष्य के परिदृश्यों को वर्तमान समस्याओं से जोड़ती हैं। यह विधा हिंदी साहित्य को समृद्ध करती है और पाठकों को वर्तमान की समस्याओं से निपटने के लिए प्रेरित करती है। भविष्य में अधिक लेखकों की आवश्यकता है जो भारतीय संदर्भ में वैश्विक मुद्दों को संबोधित करें। कुल मिलाकर, हिंदी विज्ञान कथा न केवल कल्पना है बल्कि भविष्य की तैयारी का माध्यम भी है।

संदर्भ

1. पं. शिवगोपाल मिश्र (संपादक), भारतीय भाषाओं में विज्ञान लेखन (लेख), विज्ञान (पत्रिका), प्रकाशकः विज्ञान परिषद प्रयाग, प्रयाग, अंकः 1989,
2. अजय सिंह, हिंदी साहित्य में विज्ञान कथा (शोध–प्रबंध), सन् 2002,
3. राहुल सांकृत्यायन, 'बाईसवीं सदी' प्रकाशकः किताबघर प्रकाशन, प्रयाग, संस्करणः 2012, (भारतीय विज्ञान कथाएं में संग्रहित), सम्पादकः शुकदेव प्रसाद
4. गोपाल प्रसाद मिश्र (संपादक), विज्ञान (पत्रिका), अंकः मई 2000, प्रकाशकः प्रयाग विज्ञान परिषद, प्रयाग
5. सूर्यकांत साह (अनुवादक), चंद्रलोक की यात्रा, प्रकाशकः इंडियन प्रेस इलाहाबाद, संस्करणः 1961,
6. गोपाल प्रसाद मिश्र (संपादक), विज्ञान (पत्रिका), अंकः मई 2000, पृष्ठ 4, प्रकाशकः प्रयाग विज्ञान परिषद, प्रयाग
7. शुकदेव प्रसाद (संपादक), विश्व विज्ञान कथाएँ, प्रकाशकः किताबघर प्रकाशन, दिल्ली, संस्करणः 2012,
8. शुकदेव प्रसाद (संपादक), भारतीय विज्ञान कथाएँ, प्रकाशकः किताबघर प्रकाशन, दिल्ली, संस्करणः 2012,
9. कैलाश साह, मृत्युंजयी (विज्ञान कथा संग्रह की भूमिका), प्रकाशकः राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करणः 1976,
10. डॉ. राजीव रंजन उपाध्याय (संपादक), विज्ञान कथा, (त्रैमासिक पत्रिका), प्रकाशकः भारतीय विज्ञान समिति, फैजाबाद, अंकः सितम्बर–नवम्बर 2016 ई.,
11. "मीडिया व्यग्रता का नहीं, समग्रता का परिचायक हो"–ब्रजकिशोर कुठियाला, साहित्य अमृत, अगस्त 2015,
12. "विज्ञान पत्रकारिता"–शिवगोपाल मित्र, साहित्य अमृत, अगस्त 2015,
13. एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक बाल साहित्यकार सीमूर साइमन का कथन
14. हिन्दी में वैज्ञानिक साहित्य सृजन की स्थिति–डॉ. नवीन प्रकाश सिंह 'नवीन'
15. 'मेरी विज्ञान डायरी'–देवेंद्र मेवाड़ी